



॥ श्री जगन्नाथ जी की आरती ॥

ॐ जय जगन्नाथ हरे, स्वामी! जय जगन्नाथ हरे ।
भक्तन के हितकारी, भक्तन के हितकारी, कष्ट सदा ही टरे ॥
ॐ जय जगन्नाथ हरे ॥

रत्न सिंहासन सुंदर, धुर-धुर छवि छाई ।
सुर-मुनि जन की मोहन, सुर-मुनि जन की मोहन, सबकी सुध बिसराई ॥
ॐ जय जगन्नाथ हरे ॥

ब्रह्मादिक शिव नारद, करत स्तुति भारी ।
भक्तन की पीड़ा हरने, भक्तन की पीड़ा हरने, महिमा है तुम्हारी ॥
ॐ जय जगन्नाथ हरे ॥

कमल नयन चतुर्भुज, पीतांबर सोहे ।
गरुड़ वाहन पर बैठे, गरुड़ वाहन पर बैठे, देखत मन मोहे ॥
ॐ जय जगन्नाथ हरे ॥

जगन्नाथ स्वामी जी की, आरती जो कोई गावै ।
प्रेम सहित मन भावे, प्रेम सहित मन भावे, वांछित फल पावै ॥
ॐ जय जगन्नाथ हरे ॥

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

<https://bhaktimargdarshan.com/>

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी ।
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें ।

Bhakti Margdarshan

